

नया टेलीफोन नम्बर  
नोट करें

पेरिस, 21 जनवरी, 1976 -

प्रिय आशोद

आशा है कि 23 जनवरी को दिल्ली पहुँच जाऊँगा। वहाँ कुछ दिन हिम्मा  
कि बम्बई, नागपुर और मंडला जाने का इरादा है। इस बार समय कम होगा।  
नीयबाल के सिलसिले में दिल्ली वापसी जरूरी है - 20 से 22 जनवरी तक वहाँ  
रहना होगा। केमोल्ड मेरी किताब भी उसी समय दिल्ली में टिनीज़ कागज वाहते  
हैं। कुछ चित्र साथ ला द्या हूँ, वे भी पेश किये जायेंगे।

यहाँ की प्रदर्शनी सफल है। एक शाम, फ्रांसीसी कवि SERGE PEY  
ने कविता पाठ किया। साथ में *Correspondance* का भी एक प्रोग्राम था। काफी लोग आये।  
सर्ज कविता पढ़ते पढ़ते एक बांस को घुमाते रहे, एक चक्र भी ताह। अजीब भावोल  
था। इनसे बाद में बातचीत हुई। ये TOULOUSE से एक पत्रिका निकालते हैं: "TRIBU".  
और इनकी एक योजना है कि आधुनिक हिन्दी कविता पर एक विशेष अंक यहाँ हिन्दी  
और फ्रांसीसी में काफ़ी सहे। पत्रिका अच्छी है। आपके बारे में बातचीत हुई।

रामकृष्ण को कालीदास सम्मान और निराले वर्मा के एफाडेमी पुरस्कार, ये दोनों  
पाकर छुड़ी हुई। मैंने एक को खत भी लिखा है।

गुनोब्ल ग्युजिय के पिक्ले SAVERET PIERRE GAUDIBERT को भी दिल्ली  
नीयबाल का निमंत्रण है। वे भी निराले सहित में भाग लेंगे - 13 से 22 जनवरी  
दिल्ली आने वाले हैं। आशा है कि नेपाल और दिल्ली के प्रोग्राम एक ही समय न हों।  
इहै एक दूसरे से मिलाया जा सके। काफी लोग आ रहे हैं इस बार, Claude VISEUX, Soukha,  
David Elliott, Oxford Museum, Michel Tache आदि आदि। आफसोस है, जानिग कि न  
आ सकेगी। इहै अपनी माँ की देखभाल बहुत जरूरी है।

पिक्ले पत्र मिले होंगे। नये वर्ष की शुभकामनाएँ। हमेशा भी ताह, बाद  
और लहे से - आपका

(ग)